**ओ३म्**

**-आर्यनेता प्रेमप्रकाश शर्मा की धर्मपत्नी उषा शर्मा जी की श्रद्धांजलि सभा-**

**“चींटी और हाथी में अत्यंत सूक्ष्म व समान एक आत्मा**

**है जो दोनों के शरीरों को चलाती हैः पीयूष शास्त्री”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 आज दिनांक 17 सितम्बर, 2017 को अपरान्ह 2.00 बजे से 4.00 बजे तक देहरादून के प्रसिद्ध आर्यनेता और वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून के यशस्वी मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती उषा शर्मा जी की श्रद्धांजलि सभा देहरादून के रामतीर्थ मिशन सभागार में भारी संख्या में उपस्थित लोगों द्वारा श्रद्धापूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। सभा के आरम्भ में आर्यसमाज लक्ष्मण चौक के विद्वान पुरोहित श्री रणजीत सिंह जी का विद्वतापूर्व प्रवचन हुआ जिसमें उन्होंनें आत्मा की नश्वरता को बताते हुए अनेक महत्वपूर्ण बातें कही। श्री रणजीत सिंह जी ने ऋषि दयानन्द के शरीर छोड़ने के अन्तिम क्षणों को स्मरण कराया और कहा कि उन्होंने योगावस्थित होकर ईश्वर की प्रार्थना करते हुए कहा था कि ‘हे ईश्वर! तूने अच्छी लीला की। तेरी इच्छा पूर्ण हो।’ विद्वान पुरोहित ने कहा कि श्राद्ध का अर्थ वृद्धों की श्रद्धा के साथ सेवा करना होता है। उन्होंने व्यंगोक्ति में कहा कि ‘जीवित पिता से दंगम-दंगा मरने बाद उसे पहुंचायें गंगा’। उन्होंने कहा कि मिट्टी में मिलने और मिलाने को मृत्यु कहते हैं। पुरोहित जी ने कहा कि संसार में मौत की घड़ी को कोई टाल नहीं सकता। माता उषा शर्मा जी की दिवंगत आत्मा को उन्होंने अपनी श्रद्धांजलि दी।

प्रसिद्ध आर्य पुराहित पंडित वेदवसु शास्त्री जी ने श्रीमती उषा शर्मा जी का परिचय दिया। उषा शर्मा जी का जन्म अल्मोड़ा में पिता श्री जे.एस. शर्मा और माता श्रीमती शकुन्तला शर्मा जी के यहां सन् 1951 में हुआ था। पिता इंजीनियर थे। श्रीमती उषा जी स्नातिक थी और 6 बहिन व भाईयों में सबसे बड़ी थीं। हाईडल विभाग में एएसडीओ के पद पर कार्यरत श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी से उनका विवाह सन् 1971 में हुआ था। माता उषा शर्मा जी ने एक पुत्री अनीता को जन्म दिया। माता उषा शर्मा जी के गुणों का वर्णन कर पं. वेदवसु शास्त्री जी ने बताया कि वह मृदु-भाषिणी, तीव्र बुद्धि एवं दुःखों में अविचलित व अटल रहने वाली महिला थी। सभी के प्रति शिष्टता उनका स्वभाव था। वह अपने यहां आगन्तुकों को बड़े प्रेम से भोजन कराती थीं। विनायक, दीपिका, नीतिका आदि उनके भतीजे व भतिजियां हैं तथा आर्यन एवं उत्कर्ष उनके दो नाती हैं। वह शान्त रहा करती थी। पुरोहित जी ने विकासनगर में उनके द्वारा चिकित्सा कैम्प लगाने व उसमें बढ़ चढ़ कर सहयोग करने और वहां रोगियों की निःशुल्क किये जाने के संस्मरण भी सुनाये। उन्होंने बताया कि वह होम्योपैथी की एक योग्य चिकित्सिका थीं। डाकपत्थर में 21 कन्याओं के सामूहिक विवाहों का उल्लेख कर पुरोहित जी ने कहा उसमें उनकी सक्रिय भूमिका थी और उन्होंने उन कन्याओं को आवश्यकता का सभी सामान उपलब्ध कराया था। अपने जीवन काल में माता उषा शर्मा जी ने अपने सम्पर्क में आने वाले सभी को सुख पहुंचाने का प्रयास किया। उन्होंने अपना ध्यान नहीं रखा। वह कभी घबराती नहीं थी। उन्होंने कभी किसी के सामने अपने दुःख प्रकट नहीं किये। रूग्ण होने पर परिवार के सभी लोगों ने उनकी दिलो-जान से सेवा की। पण्डित जी ने डाक्टरों के नाम बतायें जिन्होंने उनकी चिकित्सा की और कहा कि सभी डाक्टरों ने माता जी को स्वस्थ करने के पूर्ण प्रयास किये। वह लगभग दो माह तक वेंटिलेटर पर रहीं। 11 सितम्बर, 2017 को 67 वर्ष की आयु में उनकी जीवन लीला समाप्त हुई। पं. वेदवसु शास्त्री जी ने कहा कि माता जी दैनिक यज्ञ की तैयारी करती थी। अनीता और अनिल उनकी पुत्री एवं दामाद हैं। शास्त्री जी ने एक भजन भी सुनाया जो इस प्रकार हैः

गति जीवात्मा की कोई समझाये।

कहां से ये आये और कहां लाट जाये।।

कभी इसका आना जाना किसी ने न जाना।

कहां का निवासी है ये कहां है ठिकाना।

किसी को भी कोई अपना पता न बताये।। कहां लौट जाये।

मिली एक नगरी इसको अयोध्या निराली।

जो है आठ चक्र और नव द्वारों वाली।

सिर्फ चार दिन इसका बादशाह कहाये।। कहां लौट जाये।

प्रभु ने ये संग साथ बनाकर दिये हैं।

कुदरती नजारे सारे सजा कर दिये हैं।

इन्हें क्यों छोड़ जाता है समझ में न आये।। कहां लौट जाये।

पथिक प्रभु की ये माया प्रभु जानता है।

प्रभु के सिवा न कोई पहचानता है।

जो है महान शक्तिशाली विश्व को रचाये।। कहां लौट जाये।

गति जीवात्मा की कोई समझाये।

कहां से आये और कहां लौट जाये।।

पं. वेदवसु शास्त्री जी के भजन के बाद आर्य पुरोहित एवं प्रभावशाली वक्ता श्री पीयूष शास्त्री ने अपने व्याख्यान के आरम्भ में मैथिली शरण गुप्त की कविता की दो पंक्तियां प्रस्तुत कीं। वह हैं ‘बड़ी करीब से उठकर चला गया कोई, न हम हाथ पकड़ सके, न थाम सके उसका दामन।।’

पीयूष जी ने कहा कि आत्मा एक सूक्ष्म तत्व है। यह शरीर से निकल जाती है और हम सामने होते हुए भी इसे देख नहीं पाते। आत्मा अवश्य कोई चीज है। वैज्ञानिकों ने भी इसे जानने का प्रयास किया। उन्होंने एक प्रयोग किया कि मृतक को मृत्यु से पूर्व एक तुला पर लेटा दिया। उसका भार नोट कर लिया। मृत्यु के तुरन्त बाद फिर उसका भार नोट किया। दोनों में 20 ग्राम का अन्तर था। वैज्ञानिकों ने कहा कि आत्मा का भार मात्र 20 ग्राम है। पीयूष शास्त्री जी ने कहा कि चींटियों में भी वही आत्मा है जो मनुष्य में है। 20 ग्राम में तो हजारों चीटिंया अर्थात् जीवात्मायें आ जाती है अतः जीवात्मा का भार 20 ग्राम नहीं अपितु इससे भी अति न्यून है। इस कारण जीवात्मा 20 ग्राम का है, वैज्ञानिक सिद्धान्त न बन सका। पीयूष जी ने कहा कि एक छोटी सी आत्मा ही 10 क्विंटल व उससे अधिक भार वाले हाथी के शरीर को भी चलाती है। वही आत्मा चींटी में भी है और इसे भी चलाती है। आचार्य पीयूष जी ने कहा कि जो जितना सूक्ष्म होता है वह उतना अधिक शक्तिशाली होता है।

पं. पीयूष शास्त्री ने कहा कि जीवित शरीर देखता, सुनता है और अनेक क्रियायें करता है। शरीर से आत्मा के निकल जाने पर शरीर कोई काम नहीं कर पाता। शरीर में आत्मा के रहने पर ही शरीर काम करता है। इससे सिद्ध होता है कि आत्मा की ही कीमत है शरीर की नहीं। इसका उदाहरण देते हुए शास्त्री जी ने कहा कि लोग अपने बीमार सम्बन्धियों को अस्पताल ले जाते हैं। वहां उसके इलाज पर डाक्टर के कहने पर हजारों व लाखों रूपये व्यय करते हैं। मकान एवं अपनी बहुमूल्य चीजें तक बेच देते हैं। उधार भी लेते हैं। लेकिन जब शरीर से आत्मा निकल जाता है तो उस शरीर पर दस हजार रूपये भी व्यय नहीं करते। अन्त्येष्टि में जो व्यय किया जाता है वह स्वयं व समाज के लोगों को रोगों से बचाने के लिए किया जाता है। यदि अन्त्येष्टि नहीं करेंगे तो मृतक शरीर से रोगों की उत्पत्ति होने से बहुत से लोग रूग्ण व मृत्यु को प्राप्त हो सकते हैं। इससे भी यही सिद्ध होता है कि आत्मा की ही कीमत है। उन्होंने श्रोताओं को सावधान किया और कहा कि भविष्य में आपके साथ भी यही होने वाला है।

विद्वान पुरोहित पं. पीयूष शास्त्री ने कहा कि यदि आप विचार करेंगे तो आपकी आत्मा में ईश्वर की प्यास जगेगी। तब आप ईश्वर को जानने का प्रयत्न करेंगे। गीता के अनुसार आत्मा अजर अमर नित्य और अविनाशी है। अग्नि इसे जला नहीं सकती और न वायु इसे सुखा सकती है। जल इसे गिला नहीं कर सकता। शस्त्र इसे काट नहीं सकते। आप लोग आत्मा जान नहीं पाये हैं। यदि जान लेंगे तो बुरा काम नहीं करेंगे। पुरोहित जी ने कहा कि यदि मनुष्य के ज्ञान, उपासना और कर्म शुद्ध हों तो उसे मोक्ष प्राप्त होता है। अतः इन तीनों का शुद्ध होना आवश्यक है। पण्डित जी ने सद्कर्म का महत्व भी बताया। उन्होंने एक उदाहरण देते हुए कहा कि एक राजा का अधार्मिक पुत्र बहुत कंजूस था। राजा को डर था उसके बाद यह पात्रों को धन दान नहीं करेगा। उसने उसे पास बुलाया और दो वचन लिये। पहला विद्वानों की संगति और दूसरा राजा के मरने पर उसके पैरों में मोझे पहनाना। पुत्र तैयार हो गया। कालान्तर में राजा मरा तो उसने उन्हें मोझे पहनाये। विद्वानों न कहा कि मरो हुओं को वस्त्र नहीं पहनायें जाते। पुत्र ने सोचा कि मेरे राजा पिता ने जानते हुए ऐसा किया तो उसका कारण मुझ पुत्र को कोई शिक्षा देना रहा होगा। उसने विचार किया। इससे उसे शिक्षा मिली की हम अपने साथ एक मोझा भी नहीं ले जा सकते। मृत्यु होने पर हमारा यह सारा धन यही छूट जायेगा। उस पुत्र को धन के सदुपयोग का महत्व विदित हो गया। उसने पात्रों को धन का दान करने का नियम स्वीकार कर लिया। आचार्य जी ने कहा कि राम, कृष्ण और दयानन्द जी के मार्ग पर चलकर अपने जीवन को सार्थक बनायें। उन्होंने दिवंगत माता उषा शर्मा जी को अपनी श्रद्धांजलि भी दी।

श्री पीयूष शास्त्री के बाद तपोवन आश्रम के पुरोहित पं. सूरत राम जी का प्रवचन हुआ। उन्होंने एक वेद मंत्र का पाठ कराया और कहा कि अन्त्येष्टि संस्कार शरीर का अन्तिम संस्कार है। यदि वैदिक रीति से अन्त्येष्टि करें तो इसके बाद मृतक के प्रति अन्य कोई कर्म वा कर्तव्य शेष नहीं रहता। मात्र घर का शोधन ही करना होता है। पुराहित जी ने मृतकों की बरसी व उनका श्राद्ध करने की परम्परा की चर्चा भी की। उन्होंने कहा कि यह सभी कृत्य वेद की दृष्टि से अनावश्यक एवं अनुचित हैं। इन्हें करने से मृतक आत्मा व करने वाले को कोई लाभ नहीं होता। परिवार के जीवित लोगों के प्रति कर्तव्यों का पालन करना ही धर्म है। आपने अन्त्येष्टि की वैदिक विधि की विस्तार से चर्चा की और कहा कि संस्कार विधि के विधान के अनुसार ही अन्त्येष्टि सम्पन्न करनी चाहिये। उन्होंने विधान का ध्यान रखने का आग्रह किया। श्री सूरत राम जी ने पौराणिक कृत्यों की समीक्षा भी की। उन्होंने कहा कि अन्त्येष्टि व अन्य धार्मिक कार्यों के अवसर पर पुजारियों का यजमानों से धन लेना उन्हें लूटने का एक तरीका है। वह ऐसा करके अपना घर भरते हैं। उन्होंने सभी पौराणिक कुरीतियों का विस्तार से वर्णन कर उनका खण्डन किया। उन्होंने कहा कि वेद के स्वाध्याय पर ध्यान न देने से अवैदिक विधान का प्रचलन हो रहा है। उनके अनुसार मृत्यु का अर्थ यह है कि आत्मा शरीर से पृथक हो जाती है। हमारे पास शरीर होता है जिसका संस्कार अन्त्येष्टि करके हो जाता है। इसके बाद कुछ करने के लिए बचता ही नहीं है। पंडित जी ने वेद मंत्र भस्मान्तं शरीरं की व्याख्या भी की। उन्होंने कहा कि वेदमार्ग पर चलने से ही हमारा कल्याण होता है। पंडित जी ने आचरण व व्यवहार को भी वेदानुकूल बनाने का आह्वान किया।

इसके बाद आचार्या डा. अन्नपूर्णा का प्रवचन हुआ। पहले उन्होंने अपनी एक शिष्या के साथ मिलकर भजन गाया। उन्होंने कहा कि जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है। उनके अनुसार जो पुरूष के धर्म और कर्तव्य को निभाने में साथ दे वह धर्मपत्नी कहलाती है। उन्होंने जाति, आयु और भोग की भी चर्चा की व उस पर प्रकाश डाला। गुरुकुल पौंधा के आचार्य चन्द्र भूषण शास्त्री जी ने भी सभा को सम्बोधित किया और माता उषा शर्मा जी को अपनी श्रद्धांजलि दी। जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, देहरादून के प्रधान श्री शत्रुघ्न मौर्य ने दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी भावनायें प्रस्तुत कर उन्हें श्रद्धांजलि दी और श्री प्रेम प्रकाश शर्मा को जीवन में हर प्रकार का सहयोग करने का आश्वासन दिया। श्री विनायक शर्मा ने अनेक संस्थाओं से आये शोक व श्रद्धांजलि सन्देशों के प्रेषकों व संस्थाओं के नामों का परिचय वा जानकारी दी। डा. विनोद कुमार शर्मा एवं श्री उम्मेद सिंह विशारद सहित अनेक व्यक्तियों ने भी दिवंगत आत्मा की शान्ति व सदगति के लिए श्रद्धा वचन कहे। अन्त में एक मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा के प्रति ईश्वर से प्रार्थना की गई। इसकी समाप्ति पर पगड़ी की रस्म हुई। पंडित जी ने श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी के बड़े नाती आर्यन को पगड़ी बांधी। इसी के साथ आज की श्रद्धांजलि सभा समाप्त हुई। हमने जीवन में पहली बार देखा कि किसी श्रद्धांजलि सभा में देहरादून का विशाल सभागार पूरा भरा हुआ था और उसके बाहर भी बहुत बड़ी संख्या में स्त्री पुरुष खड़े हुए थे। पार्किंग में भी वाहन खड़ा करने के स्थान नहीं था। इसका कारण शर्मा जी का सामाजिक कार्य और निजी सद्-व्यवहार है। हमने अपने जीवन में देखा है कि उन्होंने अपने व्यवहार से अपने विरोधियों को भी अपना बनाया है। हम स्वयं भी कभी उनसे दूर थे। यदि कोई व्यक्ति जीवन में उनसे दूर हुआ तो हमने अनुभव किया यह उस व्यक्ति का अपना अहंकार व स्वार्थ ही था। शर्मा जी न केवल आर्य संस्थाओं को अपनी सेवायें देते हैं अपितु बड़ी बड़ी धनराशि भी दान करते हैं। इसी के साथ इस जानकारी को यहीं पर विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**